प्रमिलांचल

राजभाषा

वार्षिक पत्रिका

प्रथम अंक {2014 - 2015}

प्रधान निदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं
पदेन सदस्य, लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय, राँची।

भारत के निवर्तमान नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक आदरणीय श्री विनोद राय द्वारा राँची स्थित कार्यालयों का निरीक्षण

उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (वाणिज्यिक) श्री पी.मुखर्जी द्वारा जुलाई 2014 में हमारे कार्यालय के निरीक्षण के दौरान मेकॉन के सी.एम.डी. के साथ

निवर्तमान उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (वाणिज्यिक) श्री पटनायक द्वारा सितम्बर 2012 में राँची स्थित कार्यालय का निरीक्षण

प्रमिलांचल

राजभाषा

वार्षिक पत्रिका

प्रथम अंक {2014-15}

स्वत्वाधिकार	:	प्रधान निदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य, लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय , राँची।
प्रकाशन	:	'प्रमिलांचल' हिंदी वार्षिक पत्रिका
प्रकाशक	:	प्रधान निदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य, लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय , राँची।
अंक	:	प्रथम अंक
मूल्य	:	राजभाषा के प्रति समर्पण
वितरण	:	प्रशासन अनुभाग

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाकारों के विचार उनके निजी विचार हैं।

- संपादक मण्डल

प्रधान निदेशक,
वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं
पदेन सदस्य, लेखापरीक्षा बोर्ड
का कार्यालय, राँची।

संदेश

यह सूचित करते हुए अत्यधिक गर्वान्वित महसूस कर रहा हूँ कि प्रधान निदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य, लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय, राँची, झारखंड एक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है। मुझे विश्वास है कि हमारा यह सूक्ष्म प्रयास भारतवर्ष मे राजभाषा के उत्थान में अपना बहुमूल्य योगदान देगा। साथ ही साथ हमारा यह कदम इस कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का राजभाषा हिंदी के प्रति अंतर्निहित साहित्यिक प्रतिभा में भी निश्चित रूप से उभार लाएगा।

''प्रमिलांचल'' की अभिव्यक्तियों को पढ़ने से पता चलता है कि इसके सम्पादक मण्डल तथा अन्य रचनाकारों ने ठीक उसी प्रकार अपने रचनाशिल्प को अपने अंदर वर्षों दबाए रखा था जिस प्रकार कठोर सीप के अंदर जगमगाती मोती रखी होती है। इस रौशन करती साहित्यिक मोती को आज हमारे ''प्रमिलांचल'' के रूप में एक प्लेटफॉर्म मिला है। जो हमारी नज़र में एक सराहनीय प्रयास है। हम उम्मीद करतें हैं कि ''प्रमिलांचल'' प्रगति के रास्ते पर निरंतर अपनी छाप छोड़ती रहेगी जिससे प्रेरित होकर न जाने कितने नए प्रमिलांचलों का उदय होगा।

हमारी ओर से सम्पादक मण्डल को बहुत बहुत शुभकामनाएँ।

आपका शुभेच्छु
सुशील कुमार जायसवाल
संरक्षक एवं प्रधान निदेशक

कृपया इनका अनुसरण करें

(क) टिप्पणियाँ हिंदी में लिखिए ।

(ख) मसौदे हिंदी में तैयार कीजिए ।

(ग) शब्दों के लिए अटकिये नहीं ।

(घ) अशुद्धियों से घबराइये नहीं ।

(ङ) अभ्यास अविलम्ब आरंभ कीजिए ।

उप निदेशक (प्रशा०)
वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं
पदेन सदस्य, लेखापरीक्षा बोर्ड
का कार्यालय राँची।

संपादकीय

अत्यंत हर्ष की बात है कि हमारा एक प्रयास, राजभाषा की ओर बढ़ाया गया कदम जिसकी संज्ञा हमने 'प्रमिलांचल' दी है आज आप बुद्धिजीवी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। हमे लगता है कि हमारा 'प्रमिलांचल' एक गुलशन की तरह है जहां हमारे रचनाकारों ने विभिन्न आकर्षक रंगों एवं खुशबूओं वाले पुष्प खिलाएं हैं। हमें यह पूर्ण विश्वास है कि विभिन्न रचनाकारों के रचनाओं की क्यारियों से भरा यह गुलशन पाठकों तक अपनी सुगंध बिखेरती रहेगी।

मैं उन लेखकों, रचनाकारों, कवियों तथा अन्य सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का दिल से धन्यवाद देना चाहूँगा जिन्होने इस पत्रिका में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तरीके से अपना योगदान दिया है। इनके परिश्रम से ही हमारे कार्यालय के वर्तमान में एक नया अध्याय जोड़ा जा सका है जो भविष्य में कार्यालय के इतिहास के पन्नों में आपके समक्ष मुस्कुराता रहेगा।

पाठकों के महत्वपूर्ण विचार व शुभकामनाएं इस पत्रिका के मार्गदर्शन तथा प्रगति में चार चांद लगाएगा।

धन्यवाद।

आपका स्नेही
अजय कुमार
उप निदेशक (प्रशा०)

परिचय

हमारा कार्यालय, **प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य, लेखापरीक्षा बोर्ड**, झारखण्ड राज्य की राजधानी राँची के हृदय में सन् 1962 में स्थापित किया गया था। यह कार्यालय डोरण्डा स्थित मेकन भवन के द्वितीय तल्ले पर स्थित है। इस कार्यालय के लेखापरीक्षण के अधिकार – क्षेत्र में 19 कम्पनियां हैं। जिसमें मुख्यत: Steel Authority of India Ltd. (SAIL), MECON Ltd., Heavy Engineering Corporation Ltd. (HECL), Hindustan Steel Works Construction Ltd. (HSCL), NTPC - SAIL Power Company Pvt. Ltd., Bokaro Power Supply Company (P) Ltd. (BPSCL), The Orissa Mineral Development Corporation Ltd. (OMDC), The Bisra Stone Lime Company Ltd. (BSLC), Eastern Investment Ltd. (EIL) है। इनके अलावा 3 NGOs, 2 केन्द्रीय संवैधानिक निगम (National Highways Authority of India एवं Airport Authority Of India, Ranchi), तथा 6 स्वायत निकाय हमारे लेखापरीक्षा के दायरे में आते हैं।

हमारे दो शाखा कार्यालय भिलाई एवं दुर्गापुर तथा 7 इकाई कार्यालय है जो "**निवासी लेखापरीक्षा का कार्यालय**" के नाम से जाने जाते हैं। ये 7 भिन्न भिन्न जगहों – बोकारो (झारखण्ड), राउरकेला (उड़ीसा), भिलाई (छत्तीसगढ़), भद्रावती (कर्नाटक) तथा प. बंगाल राज्य के दुर्गापुर, बर्णपुर तथा कोलकाता में अवस्थित है।

रिश्ते

शैलेन्द्र कुमार
हिंदी अनुवादक
भारत सरकार सेवार्थ

May post your comment at
tanhashail@gmail.com

ईश्वर द्वारा मनुष्य के निर्माण पर अनेकों कहानियां आपने सुनी होगी। हमारी ओर से भी एक छोटी सी कहानी आपके लिए प्रस्तुत है। कहते हैं कि ईश्वर ने जब आदमी रूपी प्राणी को बनाया तो उन्होंने सारे कठोर वस्तुओं का समावेश कर डाला और औरत के निर्माण के लिए कुछ भी कठोर शेष नहीं रह गया।

काफी लंबे समय के विचार के बाद ईश्वर ने एक अन्य प्राणी के निर्माण की बात सोची जो आदमी का साथ दे सके। तभी उन्होंनें सुदूर आसमान में विराजमान खुबसूरत चन्द्रमा के किनारों की गोलाई, सर्पिले उर्द्धवाधार चढ़ते लता की लचक और ठंडी हवा में लहलहाते जमीन पर लगे हरे ताजे घास की लहरों को समेटा तथा पतले बांस की बनी बांसुरी का सुडौलापन तथा बाग में खिले नवीन व ताजे ओस की बूंदो भरे पुष्प के खिलने की अवस्था,
पेड़ों की पत्तियों के हौलेपन तथा सूर्य की चमकती किरणों की खामोशी,
बादलों में छिपी खामोश बारिश की बूंदों तथा बहती हवा की चंचलता,
लंबे घास में छुपे खरहे के हृदय में हरपल बैठे भय तथा जंगल में नाचते मोर के अहंकार,
पक्षियों के पंखो से भरे हृदय की कोमलता तथा चमकते हीरे की कठोरता,
मधु की मधुरता तथा जंगल में बैठे बाघ की निर्दयता,
अग्नि में मौजूद तेज जलन तथा बर्फ की तीक्ष्ण ठंड,
नीलकंठ का बातूनीपन तथा कोयल के स्वर की मधुरता,
सारस के झूठेपन तथा माता शेर की वफादारी और विश्वास,
इन सभी अकठोर तत्वों को मिला कर ईश्वर ने औरत की रचना की और इस नई कृति को आदमी को सौंप दिया।

एक सप्ताह बाद आदमी ईश्वर के पास लौटा और कहा –

''हे ईश्वर! आपने जो प्राणी मुझे दिया है उसने मेरी जिंदगी को दु:खद बना दिया है। वह बिना रूके बातें करती है और मुझे असहनीय ढंग से सताती है जिससे कि मेरा आराम छिन गया है। वह सदैव अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करना चाहती है जिससे मेरे समय की घोर बर्बादी हो रही है प्रभू। हर एक छोटी से छोटी चीज के लिए वो चिल्लाया करती है तथा एक निष्क्रिय जीवन व्यतीत करने वाली है। इसलिए हे प्रभू मैं आपकी रचना आपको वापस करता हूँ।''

''ठीक है'' ईश्वर ने कहा और उसे वापस अपने पास रख लिया।

एक सप्ताह बाद पुन: आदमी दौड़ा दौड़ा ईश्वर के पास आया और कहा –

''हे ईश्वर जब से मैने आपकी कृति आपको लौटाई है मेरा जीवन खाली सा हो गया है। मैं चारों पहर उसी नए प्राणी के बारे में सोंचता रहता हूँ। मुझे याद आता है कि किस तरह उसके नृत्य गान मेरे चक्षु तथा कर्ण को सुख प्रदान किया करते थे । किस

तरह अपनी नजरों के किनारे वाले हिस्से से वह मुझे घूरा करती थी और मुझसे वार्तालाप करते करते मेरे नजदीक आ जाया करती थी। दिखने में कितनी खुबसूरत थी वह और छूने में कितनी कोमल। पुन: उसकी हंसी सुनने को मेरा हृदय लालायित है। इसलिए हे ईश्वर कृपया कर आप अपनी कृति मुझे वापस लौटा कर मुझे पुन: जीवित कर दें।''

''ठीक है'' ईश्वर ने कहा और उसे उन्होनें वापस आदमी को सौंप दिया।

तीन दिनों बाद पुन: व्याकुल आदमी ईश्वर के पास आया और कहा–

''हे ईश्वर मैं व्याख्या नहीं कर सकता परन्तु इस नए प्राणी के साथ अभी तक का जो मेरा तजुर्बा रहा उसके मुताबिक मुझे एहसास हुआ कि वह मुझे सुख से ज्यादा दुख पहुंचाती है। हे प्रभू! मैं पुन: आपसे विनती करता हूँ आप अपने इस प्राणी को वापस अपने पास रख लें। मैं इसके साथ नहीं रह सकता हूँ।''

''तुम इसके बिना भी नहीं रह सकते'' ईश्वर ने जवाब दिया और यह कहते हुए ईश्वर पीछे मुड़े और अपने अन्य कार्यों में लग गए।

आदमी अकेला खड़ा निराशाजनक मुद्रा में बड़बड़ाया ''मैं क्या करूं मै उसके साथ भी नहीं रह सकता और उसके बिना भी नही।''

प्रेम एक एहसास है जिसे सीखने की जरूरत है।
यह तनाव है और सम्पूर्णता भी।
यह तीव्र चाह है और शत्रुता भी।
यह असीम सुख है और दर्द भी।
एक के बिना दूसरा संभव नही है।
खुशियाँ प्रेम का एक हिस्सा मात्र है और इसे ही सीखने की जरूरत है। दु:ख का अभिप्राय प्रेम से भी है। यही प्रेम में छिपा रहस्य है। यह खुबसूरती भी है बोझ भी।

– – –

(प्रस्तुत रचना Walter Trobisch की अंग्रेजी पुस्तक ''Love is a Feeling to be Learnt'' का हिंदी अनुवाद है।)

www.facebook.com/shailendra kumar shail

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग

अनिरूद्ध कुमार
स० लेखापरीक्षा अधिकारी

लेखापरीक्षा या अंकेक्षण किसी व्यावसायिक संस्था के हिसाब किताब की विशिष्ट एवं विवेचनात्मक जाँच है जो एक योग्य तथा निष्पक्ष व्यक्ति द्वारा संस्था से प्राप्त प्रमाणों, प्रपत्रों तथा स्पष्टीकरणों की सहायता से की जाती है, जिससे कि अंकेक्षक एक निश्चित अवधि के लिए बनाए हुए हिसाब किताब के संबंध में यह प्रतिवेदन दे सके कि :-

(क) चिट्ठा उस संस्था की आर्थिक स्थिति का उचित एवं सत्य चित्र प्रस्तुत करता है या नहीं।
(ख) लाभ-हानि खाता संस्था के लाभ तथा हानि की वास्तविक स्थिति बताता है या नहीं तथा
(ग) बही खाते नियमानुसार बनाये गये हैं और पूर्ण हैं।

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग का गठन 1860 ई० में किया गया था। 1919 ई० में महालेखापरीक्षा को संवैधानिक मान्यता दी गयी। सन् 1935 में महालेखापरीक्षा की स्थिति को सुदृढ़ किया गया तथा सन् 1950 में इसे नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के रूप में निर्दिष्ट किया गया।

भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक के कर्तव्यों एवं शक्तियों का प्राधिकार भारतीय संविधान के अनुच्छेद 149 से प्राप्त है। सन् 1971 में नियंत्रक महालेखापरीक्षक के कर्तव्यों, शक्तियों एवं सेवा शर्तों का अधिनियम (DPC. Act) बनाया गया। भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग के अधिकारियों तथा कर्मचारियों की संख्या 60,000 से अधिक है जिनकी सहायता से संघ एवं राज्य सरकार के ईकाईयों, सरकारी कंपनियों, स्वायत निकायों एवं ऐसे अन्य संगठनों जो संघ व राज्य के सरकारों द्वारा पर्याप्त रूप से वित्तपोषित हैं, का नियमित तथा निष्पादन लेखापरीक्षा किया जाता है।

विभाग द्वारा किये गये दूसरे मुख्य कार्यों में राज्य सरकारों के लेखा का संकलन तथा कर्मचारियों के भविष्य निधि एवं पेंशन के लाभों जैसे हकदारी का विनियमन तथा प्राधिकरण करना शामिल है। विभाग की शाखाएँ सभी राज्यों में स्थित हैं जो दूसरे कार्यों को सुचारू रूप से संपन्न कराने में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। दूसरे अतिरिक्त विभाग की अन्तर्राष्ट्रीय शाखाएँ भी हैं जो लंदन, वाशिंगटन एवं क्वालालम्पुर में अवस्थित हैं।

विभाग द्वारा मुख्य रूप से निम्नलिखित लेखापरीक्षा किये जाते हैं।

(क) Transaction/Compliance Audit
(ख) Accounts Audit/ Financial Audit/ Certification of accounts
(ग) Performance Audit

संघ एवं राज्य सरकारों की इकाइयाँ, सरकारी कम्पनियाँ तथा अन्य वित्तपोषित इकाईयों के लेखापरीक्षण के दौरान पाई गई अनियमिताओं को CAG प्रतिवेदन में दर्शाया जाता है जिसे संसद/विधानसभाओं में प्रस्तुत किया जाता है। जिस पर संघ या राज्य सरकार द्वारा कार्रवायी की जाती है।

शैलेन्द्र कुमार
हिंदी अनुवादक
भारत सरकार सेवार्थ

अतीत के वे पचास रूपये

May post your comment at
tanhashail@gmail.com

अध्ययन में दिलचस्पी न होने के बावजूद अध्यापन करने में रूचि दिखाना व्यंग्य सा प्रतीत होता है। मोनू का भी वही हाल था। बचपन से पढ़ाई में कम रूचि रखने के बावजूद जिंदगी में पढ़ाने का पहला प्रस्ताव जो सन् 1997 में उसे मिला उसने छोड़ना उचित नहीं समझा। बगल की आंटी ने दो छोटे बच्चों को पढ़ाने का प्रस्ताव रखा कीमत थी 50 रूपये महीना। दो बच्चों के साथ उनका एक छोटा भाई भी बैठा करता मानों दो पर एक फ्री कॉसेप्ट पर काम करने वाला विपणन का फर्मूला हो। महीने का अंत हुआ, आंटी ने एक 50 का नोट थोड़ा मुस्कुराते हुए मोनू की ओर बढ़ाया। बिना कुछ बोले उस कागज के महत्वपूर्ण टुकड़े को रखते हुए वह निकल लिया। आज मोनू के लिए नई शाम थी एक ऐसी शाम जो आज तक उसने नहीं देखी थी। लग रहा था मानो आकाश को नीले रंग से कोई पेंटर रंग गया हो जैसे दिवाली आने के पहले हमारे घरों में किया जाता है, ठीक उसी तरह। क्यूं ये सब इतना नया सा दिख रहा था उस दिन। बहुत खास था मोनू के लिए वो बिना किसी सिकुड़न व गांधी के हंसते चेहरे वाला कागज का टुकड़ा।

नए भोर की तरह अंगड़ाइयां लेता वो 50 का कड़कड़ाता हुआ नोट चेहरे पर असीम व अभूतपूर्व खुशी लिए मोनू ने माँ को दिखाया।

''तुम्हें क्या लग रहा है कि तुम्हें बहुत ज्यादा पैसे मिल गए हैं मंदिर में जा कर प्रसाद चढ़ा देना'' माँ का जवाब मिला।

''ले आधे पैसे तो भगवान ही ले लेंगें तो मेरी आधी कमाई गई। महीने भर की आधी कमाई भगवान के हत्थे, हद हो गई'' मोनू ने मन ही मन सोचा पर मम्मी ने कहा है तो करना ही था।

उंची इमारतों वाला शहर जलजले के बाद जिस तरह मलवे में बदल जाता है ठीक उसी तरह समय बदला और धीरे धीरे अनेको परिवर्तन होते गए। सन् 2006 में मोनू ने एक स्कूल में अंग्रेजी के शिक्षक के पद को संभाला और स्कूल के क्रियाकलापों में तल्लीन होने में उसे वक्त नहीं लगा। बहुत से छात्रों से अच्छी दोस्ती हो गई। स्कुल अधिक दूरी पर होने के कारण मोनू ने उसे कुछ 6-8 महीनों में ही छोड़ने का निर्णय कर लिया। वो स्कूल में आखिरी दिन था। आखिरी दिन के स्कूल के बाद घर लौटते ही मोबाइल की घंटी बजी।

''जी सर बोल रहे हैं क्या''

''जी बोल रहा हूँ।''

''सुना है आप स्कूल छोड़ रहे हैं''

''जी छोड़ चुका हूँ आज से। वैसे आपको पहचाना नहीं।''

''मैं प्रिंसी का पिता बोल रहा हूँ वो आपके क्लास में पढ़ती है।''

''अच्छा समझ गया, प्रणाम, कहिए।''

''आपके जाने की खबर सुन कर प्रिंसी बहुत रो रही है। चाहती है आप स्कूल न छोड़ें।''

पटाखे की तेज आवाज के बाद जैसे कानों में सन्नाटा छा जाता है मोनू के दिमाग में मानो वैसा ही सन्नाटा छा गया। ऐसा भी होता है कोई अंजान किसी के लिए क्यों रो सकता है। मैने तो उन्हें कभी एक टॉफी भी नहीं खिलाई है। बस अपनी जिंदगी के कुछ घंटे दिए हैं वो भी अंग्रेजी पढ़ाने में। मोनू के दिमाग में भीतर ही भीतर ये बातें चल रही थी।

''जी यह संभव नहीं है, पटना में ही किसी दूसरे स्कूल का ऑफर आ गया है। अब इतनी दूर आने का कोई मतलब नहीं बनता मेरे लिए।''

''सर वो राजेन्द्र नगर में भी मेरा मकान है आप कहें तो प्रिंसी को वहीं शिफ्ट कर देता हूँ। कम से कम आप उसे ट्यूशन ही दे दीजिए।''

''जी वो लोकेशन भी हमारे घर से काफी दूर है..... और वो भी एक ट्यूशन के लिए....''

मोनू को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे और कैसे बात को खत्म करे क्योंकि वह इस बात को शीघ्र ही खत्म करना चाहता था।

''अंकल जी आप कहें तो मैं एक कुशल शिक्षक को रिकमेन्ड कर सकता हूँ।''

इस तरह बात को टाल कर इस संवाद से मोनू ने अपने आप को निकाला। शाम होते न जाने कितने छात्रों के फोन आने लगे। पर मोनू की अपनी समस्याएं थी और वो वापस नही जाना चाहता था।

आगे चलकर मोनू ने बहुत सारे कानटैक्टस बनाए जिसका उसकी जिन्दगी में बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। आदमी जिनके बीच और जिनके साथ रहता है उसी का तो प्रभाव पड़ता है उसकी जिंदगी पर और खुद के तौर तरीकों से वो दूसरों को भी प्रभावित करता है।

हालांकि वो काफी बड़े थे फिर भी पास रहने वाले मनोज भैया से काफी गहरी मित्रता सी हो गई थी। उनके माध्यम से प्रसार भारती, पटना में अंग्रेजी टॉक जो 10 मिनट का ऑडियो प्रोग्राम होता है करने का मौका मिला। यह मूलत: सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व आध्यात्मिक मुद्दों पर अपना भाव व्यक्त करने के लिए होता है। साउण्ड प्रुफ कमरे में रिकॉर्डिंग करने वाली सुंदर सी लड़की के साथ उस 10 मिनट के लिए लगभग 350 रूपये मिलने थे। लगा 30 दिन एक घंटा रोज और महीने के अंत में 50 रू का नोट और कहां खुबसूरत लड़की के साथ 10 मिनट मात्र और 350रू। किसी कोने से सौदा घाटे का नहीं था और एक एक्सपोजर जो मिले वो अलग।

पहला दिन था रेडियो पर बोलने का। वातानुकूलित साउण्ड प्रुफ कमरा और सामने सुन्दर सी दिखने वाली लड़की। लगा जिंदगी में और भी कुछ चाहिए क्या।

''सामने शीशे के बाहर मैं हांथ उठा कर इशारा करूंगी तो आप अपनी अभिव्यक्ति पाठ शुरू कर देना''

खुबसूरत लडकी ने बड़ी खुबसूरती से कहा।

''जी ठीक है'' मोनू ने शालिनता से जवाब दिया।

कमरा चारो तरफ से बंद कर दिया गया। सामने माइक और ठीक 4 गज की दूरी पर दीवार मे एक 3×3 का शीशा और शीशे

के बाहर लड़की। रिकॉर्डिंग मशीन को तैयार कर उसने इशारा किया (क्योंकि उसकी आवाज अंदर नहीं आ सकती थी) और बस मोनू शुरू हो गया। दस मिनट बड़ी तेजी से निकल गया। लड़की ने वापस रिकॉर्डिंग बन्द करने का इशारा किया और दरवाजे से अंदर आ गई।

''बहुत अच्छी आवाज है आपकी। बहुत अच्छा रहा'' मोनू के बिना पूछे ही लड़की ने जवाब दे दिया।

मानो उसके मन के सवालों को वो भांप ली हो।

''जी शुक्रिया। कुछ गड़बड़ तो नहीं हुई'' फूले हुए मोनू ने एक सांस में कहा।

''बहुत बढ़िया था बिल्कुल परफेक्ट'' जवाब मिला।

मोनू को लग रहा था चलो करियर मे चार चांद लगाने का यह भी एक अच्छा अध्याय रहा हालांकि यह कोई परमानेन्ट सॉल्युशन नहीं था।

कुछ ही समय पश्चात अंग्रेजी के एक राष्ट्रीय स्तर के इंस्टीट्यूट में पढ़ाने का प्रस्ताव आया। स्पोकेन इंग्लिश पढ़ाना था बच्चों को, मतलब बड़े बच्चों को प्रत्येक क्लास के 250 रू मिलने थे। फिर याद आ गई पुरानी बात कहां 30 दिन एक घंटा रोज और महीने के अंत में 50 रू का नोट और कहां एक घंटे और 250 रू वो भी राष्ट्रीय स्तर के प्रतिष्ठित इंस्टीटयुट के टैग के साथ। ''नानी मरी थी कि यह मौका छोड़ दूँ'' मोनू ने मन ही मन कहा।

''खुद हिन्दी माध्यम का छात्र भला इतने बड़े इंस्टीट्यूट में अमीर घरों के बच्चों को अंग्रेजी कैसे पढ़ा पाउंगा।'' मोनू मन ही मन खुद से सवाल करने लगा, पर सामने सैलरी स्ट्रक्चर ने भी दिमाग में घर बना लिया था। पैसों की जरूरत भी थी। बस कर दिया ओके। पता चला डेमो क्लास देना है कुछ पुराने मंझे हुए शिक्षकों के सामने।

''आप सामने बोर्ड के पास जाइए और क्लास शुरू कीजिए'' बैठे दो फैकल्टीज में से एक फैकल्टी ने आदरपूर्वक कहा।

मोनू ने अब तक कई जगह का तजुर्बा हांसिल कर लिया था। कुछ खास समस्या नहीं थी। उसने शिक्षकों की क्लास शुरू कर दी। वातानुकूलित कमरा था और तीन लोग जिसमें आज मोनू शिक्षक और दो शिक्षक मोनू के छात्र बस एक दिन के लिए। लगभग 20 मिनट के क्लास में सब कुछ ओके। बस शुरू हो गया सिलसिला अनेक अनुभवों के साथ। पढ़ाना मोनू के लिए हमेशा से सुखद अनुभव देने वाला पल रहा था। उसकी जिंदगी से अगर अध्यापन निकाल दिया जाए तो शायद वह खोखला दिखेगा।

हर प्राणी के तृष्णा की तृप्ती हो सकती है परन्तु मनुष्य के तृष्णा की तृप्ती कहां हो पाई है भला। हालांकि उसके अध्यापन का कार्य बहुत धीमी प्रगति से चलता रहा और यही एक मनचाहा कार्य था जो उसकी जिंदगी में कभी रूका नहीं अन्य चीजों की तरह। आगे कुछ और मौके आए करियर को तराशने के और फिर एक दिन अचानक फोन की घंटी बजती है-

''अरे यार वो एक महिला कॉलेज में अंग्रेजी पढ़ाना है पढ़ाओगे क्या, यहीं पटना में ही। प्रत्येक दिन में दो क्लासेज लेने हैं बी. बी.ए और बी.सी.ए के प्रथम और द्वितीय वर्ष के छात्राओं को।'' किसी दोस्त ने फोन पर कहा।

एक तो कॉलेज में पढ़ाने का मौका और दूसरा महीला कॉलेज दोनों हाथों में लड्डू। अब क्या था वर्षों पुराने जंग लगे सपने के साकार होने का वक्त आ गया था। बस चौखट पर खड़ा था वह अवसर, दरवाजा खुलने पर अंदर आने के इंतजार में। कॉलेज में पढ़ाने की पुरानी इच्छा अब पुरी होने वाली थी उसकी।

एक तो कॉलेज में पढ़ाने का मौका और दूसरा महिला कॉलेज दोनों हाथों में लड्डू। अब क्या था वर्षों पुराने जंग लगे सपने के

साकार होने का वक्त आ गया था। बस चौखट पर खड़ा था वह अवसर, दरवाजा खुलने पर अंदर आने के इंतजार में। कॉलेज में पढ़ाने की पुरानी इच्छा अब पुरी होने वाली थी।

''हाँ-हाँ'' मोनू ने बेबाक जवाब दिया बिना पैसों की बात किए।

बिना पैसों के बात किये क्योंकि सपनों के आगे अक्सर जिम्मेदारियां दम तोड़ती नजर आती है। जो शायद अपरिपक्वता की निशानी है।

''जिंदगी में सपनों के टूटने का सिलसिला ही तो देखा है आज तक और सपनों के टूटने की आवाज अक्सर तन्हाइयों में ही सुनाई पड़ती है। कहां कोई सुन पाता है इन्हे।'' बादलों की ओर देखते हुए मोनू अपने आप से कितनी बातें किया जा रहा था।

क्लास का पहला दिन, चारों तरफ लड़कियां ही लड़कियां, अजीब सा महौल था। पहले कभी ऐसे महौल में नहीं पढ़ाया था मोनू ने जहां हर तरफ लड़कियां ही नजर आए। कैम्पस के अन्दर जैसे ही घुसा सभी ऐसे देखने लगे मानो उसने कोई गुनाह कर दिया हो या फिर वह दूसरे ग्रह से वायुयान में बैठ कर आया हो और लोग उसे एक्सप्लोर कर रहे हों। वह सीधे अपने को-ऑडिनेटर से मिलने गया। छोटे से जान पहचान के बाद उसे क्लास में जाने को कहा गया।

''जी कमरा नं. 7 के लिए किधर जाना होगा'' मोनू ने स्टूल पर बैठे चपरासी से पूछा।

''सामने से बाएं दूसरा कमरा'' जवाब मिला।

मोनू का किसी कॉलेज में पढ़ाने का यह पहला दिन था। वह सीधे क्लास में गया और अपना अल्प परिचय देते हुए उसने क्लास शुरू किया। सब कुछ ठीक ठाक रहा सिवाए उसकी ओर उठने वाले कुछ निगाहों के। जल्द ही क्लास की हर लड़कियां उससे घुल मिल गई जैसे शक्कर और पानी। सबकुछ ठीक चलता रहा। एक दिन अचानक एक अजीब सा वाकया हुआ। कॉलेज समय पर पहूंच गया था मोनू। लगभग 10:30 हो रहे होंगे। हाजिरी बनाने के बाद वह सीधे क्लास में चला गया। बी.बी.ए. द्वितीय वर्ष का क्लास रूम लड़कियों से भरा था। मोनू के क्लास रूम में जाते ही लड़कियों ने हर रोज की तरह एक स्वर में गुड मार्निंग किया ठीक उसी लय के साथ जैसे स्कूली बच्चे किया करते हैं। मोनू ने अपना किताबों से भरा थैला लेक्चर टेबल पर रखा ''जॉर्ज ऑरवेल'' की ''एनिमल फार्म'' नामक पुस्तक निकाली और शुरू हो गया।

''चलो'' हर बार की तरह आदतन मोनू ने कहा।

''कहां चलना है सर जहां कहिएगा वहां चलेंगे'' सामने से किसी लड़की की अंगड़ाइयां लेती आवाज आई।

मोनू ने कोई प्रतिकिया देना उचित नहीं समझा हालांकि उसने आवाज पहचान ली थी। वो एक शरारती लड़की थी सुप्रिया। शरारती थी बदमाश नहीं। वह लड़कियों की बॉस थी। इस उम्र में छिपे बचपने को वह बखूबी समझता था और लड़कियां भी उससे डरती कहां थीं। बस शरारत हो गई। वैसे कॉलेज में ये आम बातें होती हैं। कालेज का यह सफर बिल्कुल ठीक ठाक चल रहा था कि अचानक एक दिन भारत सरकार के किसी कार्यालय से बुलावा पत्र आ गया। मोनू को तो याद भी नहीं था कि कभी उसने सरकारी सेवा के लिए कोई तैयारी की हो या परीक्षा भी दिया हो। पत्र देखा तो याद आया कि कभी इलाहाबाद में उसने परीक्षा दिया था।

आज मोनू एक अनुवादक है..... *हिन्दी* अनुवादक, भारत सरकार का सेवक। देखें तो बहुत कुछ मिल गया और शायद कुछ भी नहीं। पूरे 30 दिनों तक ट्यूशन पढ़ाने के बाद मिलने वाले उस 50 रूपये के नोट की याद आज भी ताजा है उसके हृदय में। न जाने कैसी खुशबू थी उस कागज के छोटे से टुकड़े में जो आज सरकार द्वारा मिलने वाली इस 1200

स्क्वायर फीट वाली क्वार्टर में गौण हो चुकी है।

क्या मोनू बदल गया है, पैसे की कीमत बदल गई है या परिवेश। पैसों के नीचे आज इंसान की कीमत दब गई है। मोनू को भी ज़िन्दगी ने सिखा दिया था शायद कि आज वही इन्सान सबसे ज्यादा सुखी है, जिसकी हँसी सबसे सस्ती है। बिल्कुल उतनी ही सस्ती जितना कि अतीत के वो 50 रूपये का नोट।

www.facebook.com/shailendra kumar shail

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।

चन्दन कुमार
स० लेखापरीक्षा अधिकारी

अभिव्यक्ति सार : भारत के पिछड़ेपन में अंग्रेजी का योगदान।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा दिये गये इस कथन से यह ज्ञात होता है कि किसी भी देश या समाज में सामाजिक व सांस्कृतिक बदलाव तभी होगा, जब वहां एक भाषा सुदृढ़ होगा, जब वहां एक भाषा की ''राष्ट्रभाषा'' की स्वीकार्यता होगी। एक भाषा होने से उस राष्ट्र की एकता प्रबल होती है, एकीकृत प्रणाली विकसित होती है तथा एक नेतृत्व में विकास के लिए सामाजिक एवं सांस्कृतिक बदलाव सुदृढ़ होता है। सरल भाषा-बोध होने से विचारों में समानता और एकरूपता आती है, जो किसी भी समाज के विकास में सहायक है।

भारत में वह एक भाषा 'हिन्दी' ही है, जो सर्वमान्य व्यवहारिक और लोगों के द्वारा बोली जानेवाली भाषा है। हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की प्रथम राजभाषा है और भारत की सबसे अधिक बोली और समझे जाने वाली भाषा भी है। हिन्दी और इसकी बोलियां उत्तर एवं मध्य भारत के विविध प्रांतों में बोली जाती है। भारत और विदेश में 60 करोड़ से अधिक लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। फिजी, मॉरिशस, गुयाना, सूरीनाम की अधिकतर और नेपाल की कुछ जनता हिन्दी बोलती है। इससे पता चलता है कि हिन्दी सर्वव्यापी भाषा है जो की सामाजिक व सांस्कृतिक विकास की सूचक है।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नही है, वह उन्नत नही हो सकता।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा दिया गया यह कथन किसी भी राष्ट्र के विकास में उसकी भाषा के महत्व का परिचायक है। यह तभी संभव हो सकता है, जब उस देश में अधिकांश लोगों की भाषा एक हो। भाषा सिर्फ अभिव्यक्ति का माध्यम ही नही होता, बल्कि उस राष्ट्र की सामाजिक व सांस्कृतिक बदलाव का सूचक भी है। राजभाषा हिन्दी एक ऐसी भाषा है, जिसने अपनी सुगमता के लिए अन्य भाषाओं का भी इस्तेमाल किया है। इस संदर्भ में डा. राजेन्द्र प्रसाद का यह बयान प्रासंगिक है कि

''हिन्दी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नही किया।''

इसी कथन से इस बात का पता लगाया जा सकता है कि राजभाषा हिन्दी कितना सुगम्य है। हमारा देश भारत भले ही विविधताओं का देश है, फिर भी कहीं न कहीं एक समानता है जो इसे एक माला में पिरोये हुए है और उस एक समानता में हमारी राजभाषा हिन्दी की सुगमता भी एक है। विश्व में कुल 70 देश ऐसे हैं जो भारत के बाद आजाद हुये। भारत छोड़कर उन सब में एक बात सामान्य है कि आजाद होते उन्होंनें अपनी मातृभाषा को अपनी राष्ट्रीय भाषा घोषित कर दिया, लेकिन शर्म की बात है भारत आज तक नहीं कर पाया है। आज भी भारत में सरकारी स्तर की भाषा अंग्रेजी है। आज हमारे यहां

अंग्रेजी को विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा का मूल समझा जाता है, जो कि गलत है। विश्व में अनेक ऐसे देश हैं जहां वे अपनी भाषा के दम पर तकनीकी तथा विज्ञान में हमसे काफी आगे हैं। जापान, जर्मनी, फ्रांस तथा चीन ऐसे ही उदाहरण हैं, जहा अंग्रेजी न के बराबर बोली जाती है। परन्तु हमारे देश में अंग्रेजी बोलना गर्व की बात मानी जाती है। अंग्रेजी बोलने वालों को पढ़ा-लिखा इंसान समझा जाता है। आज के प्रत्येक वर्ग की नई पीढ़ी हिन्दी के प्रति रूझान दिखाने की बजाय उसकी उपेक्षा में आधुनिकता का बोध इस तरह कराती है जैसे कि 'नयी भारतीय सभ्यता' का यह एक प्रतीक हो। इनमें तो कई ऐसे हैं जिनकी हिन्दी तो गड़बड़ है साथ ही अंग्रेजी भी कोई अच्छी नहीं है। आज हम हिन्दी में लिखा पढ़ते भी इसलिए हैं ताकि जैसा लेखक ने लिखा है वैसा ही समझ में आये। वरना तो जिनको थोड़ी बहुत अंग्रेजी आती है उनको तो हिन्दी में लिख दोयम दर्जे का लगता है। वैसे लोगों की अंग्रेजी देखने के बाद यह पता चलता है कि उनकी अंग्रेजी भी कोई परिक्व है इसपर विश्वास नहीं करना चाहिए, क्योंकि बात समझ में आ गयी तो फिर कौन उसका व्याकरण देखता है। हम अपनी राजभाषा को प्रमुखता न देकर एक विदेशी भाषा 'अंग्रेजी' को विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा का मूल समझ रहे हैं, यह एक बहुत बड़ी विडंबना है, और राष्ट्र के नव-निर्माण में बहुत बड़ी बाधा। इस संदर्भ में प्रख्यात विचारक 'वाल्टर कैनिंग' का यह कथन प्रासंगिक है कि

विदेशी भाषा का किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।

शैलेद्र कुमार
हिंदी अनुवादक
भारत सरकार सेवार्थ

राजीव जी की शादी और प्याज

ये एक महज इत्तेफाक था।
राजीव जी का भाग्य उनके साथ था।।

राजीव जी की न होने वाली सास।
बैठी थी अपनी पति देव के पास।।

कर रहे थे दोनो गुफ्तगु दिन भर।
कहां से लाएं अपनी चंदा के लिए योग्य वर।।

ससूर जी मैट्रिमोनियल देख-देख हो गए परेशान।
बोले इश्तेहार देख रिश्ता करना नहीं आसान।।

छपा देते हैं लड़का एम.बी.ए पास है।
चला जाता हूँ सोंचकर उसमें होगा कुछ खास है।।

बाप स्वागत करता है कहकर 'आओ भाई आओ'।
अरी भाग्यवान अपने 'मुन्नु' के लिए रिश्ता आया है कुछ मिठाई तो लाओ।।

बातों-बातों में पता चला क्या है एम.बी.ए, अखबार और इश्तेहार।
उसी दिन से मान गया मैं अपनी हार।।

बोले एम.बी.ए. मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन नहीं है जी।
इसका मतलब मेंम्बर ऑफ बैचलर एसोसीएशन ही सही है जी।।

ससूर जी बोले ये रिश्ता नहीं, गले का फन्दा है।
इन लड़के वालों का यही गोरखधंधा है।।

बोले हे ईश्वर अपनी दुनिया तो देख।
सारे के सारे इन्सान हो गए हैं फेक (fake)।।

पति को चिन्तित देख पत्नी ने कहा।
अजी अब तक हम दोनो ने बहुत कुछ सहा।।

बोली मेरा दिमाग भी नहीं है कुछ कम।
एक बार कहो तो आजमाउँ इसका दम।।

कल हमें मिल जाएगा योग्य वर।
निकाल दो अपने मन से सारी चिंताएं और डर।।

पति हुआ चकित बोला मैं सालों से हूँ परेशान।
जितना समझती हो उतना नहीं ये आसान।।

बोली पत्नी चुप रहो जी।
तुम तो बस भगवान का नाम जपो जी।।

कल चलना है हमें डोरण्डा बाजार।
हो जाना तुम सुबह 8 बजे तैयार।।

दुसरी सुबह दोनों निकल पड़े डोरण्डा।
पति से रहा नहीं गया बोला वर ढुंढना है या लाना है अंडा?।।

बोली पत्नी चुप रहो जी।
तुम तो बस भगवान का नाम जपो जी।।

(उधर बाजार में तरह तरह की सब्जियां बिक रही थीं। पति को समझ नहीं आ रहा था कि करना क्या है। तभी

पत्नी एक प्याज के दुकान के बगल में जाकर खड़ी हो गई।)

पति कहता है अजी करना क्या है कुछ तो बताओ।
इस कदर अब हमें न सताओ।।

बोली पत्नी चुप रहो जी।
तुम तो बस भगवान का नाम जपो जी।।

(वहां बहुत सारे लोग सब्जियां खरीद रहे थे पर प्याज की दुकान पर कोई नहीं आ रहा था लगभग 1/2 घंटे बीत गए। तभी एक सज्जन (राजीव जी) आए प्याज की दुकान पे बोले भइया 3 किलो प्याज देना।) जैसे ही 3 किलो का नाम सुना-

'3 किलो प्याज' पत्नी चिल्लाई।
कंहुनी से धक्का मार अपने पति को जगाई।।

बोली देखो जी लड़का अच्छे घर का लगता है।
अपनी बेटी के लिए योग्य वर हो सकता है।।

पति ने भी खुद में कुछ बुदबुदाया।
अंदर ही अंदर गुदगुदाया।।

बोला भाग्यवान देनी होगी तेरे दिमाग की दाद।
अब नहीं करूंगा तुझसे कोई विवाद।।

तुरंत कुर्ते की बायी जेब में रखा मोबाइल निकाला।
बोले बड़े दामाद को बता दूँ बड़े घर का लड़का हमने ढूंढ निकाला।।

दामाद जी पूछे लड़का क्या करता है।
बोले नहीं जानता पर 3 किलो प्याज की हैसियत रखता है।।

'3 किलो प्याज' चिल्लाया दामाद।
बोले ससूर जी साली का घर अब होगा आबाद।।

परिवार में दौड़ गई अब खुशी की लहर।
चर्चाएं विवाह की होने लगी चारो पहर।।

पत्नी बोली अजी खड़े रहोगे।
या कुछ आगे भी बढ़ोगे।।

लड़का दिख रहा है गंभीर।
पर प्याज के झोले से लगता है अमीर।।

पूछ लो जरा नाम।
आखिर करता क्या है काम।।

बोले बेटा अपना नाम बताना।
हमें तुमसे रिश्ता है बनाना।।

बोले 'रिश्ता?' अंकल जी मैं हुँ थोड़ा अजीब।
वैसे नाम है मेरा राजीव।।

बेटा लगते हो गंभीर और उलझाए से।
रखते हो फिर भी चेहरा हमेशा मुस्कुराए से।।
बोले अंकल जी Comm. Audit जो आता है
मुस्कुराता चेहरा मुफ्त पाता है।

मैं वहीं का अधिकारी हूँ।
कोयला हो या टेलीकॉम सब पर भारी हूँ।।

आप चाहते क्या हैं शीघ्र बताना।
जल्द मुझे अपने घर भी है जाना।।

बोले अपनी बेटी से करना चाहता हूँ तुम्हारी शादी
सब कुछ दूँगा टी.वी. फ्रिज और खादी।।

बेटा तुम मुझे बड़े पसन्द हो (प्याज के झोले की ओर देखकर)
तुम्ही मेरे रसगुल्ले तुम्हीं कलाकन्द हो।।

बोले अंकल जी कर दी है आपने थेड़ी लेट।
मेरी तो शादी हो गई कब की सेट।।

बारात थी परसों, वर-वधु स्वागत है आज
दिखता नहीं रिसेप्शन पार्टी के लिए खरीदा है पूरे 3 किलो प्याज।।

धन्यवाद

प्रस्तुत कविता वर्ष 2013 में प्याज के दाम में हुई अत्यधिक वृद्धि पर व्यंग्य मात्र है।

www.facebook.com/shailendra kumar shail

गिरीश चौबे कश्
वरीय लेखापरीक्ष
निवासी लेखापरीक्षा कार्या

इक्कीस वर्षों की विभागीय परीक्षा का सफरनामा

कार्यालय कार्यों को सपरिश्रम, सकुशल करते हुए प्रारम्भिक परीक्षा और एस०ओ०जी०ई० की प्रथम भाग की सफल
पर परीक्षार्थियों की खुशी हुई अतिरेक
क्योंकि द्वितीय भाग की परीक्षा है शेष,
जो दिलाएगी उसे अधिकारी के रूप में पहचान विशेष।
तभी विषयों के परिवर्तन का उठा एक तूफान,
क्योंकि वित्तीय प्रबन्धन, सांख्यिकी और
आया कम्प्युटर सिस्टम का प्रावधान।
कम्प्युटर सिस्टम की सैद्धान्तिक तथा वयवहारिक परीक्षा में सफलता पाकर
अन्य विषयों में मुँह की खाकर, उठा ही था कि अचानक फिर
परिवर्तन की उठी दूसरी आंधी और परीक्षा हो गया ऑनलाईन
एस०ओ०जी०ई० अब एस०ए०एस० के रूप में प्रकट हुआ बनकर रिफाईन।
एक्जम्पशन मैट्रीक्स में दोनों ग्रुप के एक एक विषय की देनी होगी परीक्षा
कुछ बना ऐसा प्रावधान।
परिश्रम से नहीं हटते हुए किया निश्चय रखने को सफर जारी,
मगर था विधि का कुछ और विधान।
एस०ए०एस० का द्वितीय ग्रुप तो निकल गया,
परन्तु प्रथम ग्रुप का एक विषय पुनः लुढ़क गया।
पूरक परीक्षा मिलाकर छः बार की प्रक्रिया हुई पूरी,
मगर एक विषय हो गया नकारात्मक।
एस०ओ०जी०ई० का प्रथम भाग और एस०ए०एस० का द्वितीय ग्रुप की सफलता
पाकर परीक्षार्थी की परीक्षा का हो गया पूर्णविराम।
परिवर्तनों की आँधी और तूफान को सहते हुए परीक्षार्थी अब परीक्षा की अर्थी ढोते हुए,
गमगीन रहते हुए पुनः कार्यालयीन कार्यों में हो गया लिप्त,
क्योंकि उसकी सेवा काल कुछ वर्षों के लिए अब रह गयी है संक्षिप्त।

बैरिस्टर राम
पर्यवेक्षक
निवासी लेखापरीक्षा कार्यालय

सीमित रखें इच्छाएं

जब हमारी महत्वकांक्षाएं सीमित होती हैं, तो हम आनन्दपूर्वक जीवन जीते हैं, लेकिन जब हमारी इच्छाएं असीमित होती हैं, तो हमे झूठ व धोखे का सहारा लेते हैं। हम अपनी इच्छाएं पूरी करने के लिए दूसरों को कष्ट देने लगते हैं। अक्सर हम अपनी असीमित इच्छाओं को पूरा करने के लिए अपने जीवन की सच्ची खुशियों को नजर अंदाज कर देते हैं। जब हमारी चिंताएं सीमित होती हैं तो हम सोच-विचारकर सजग फैसले करते हैं, पर जब हमारी चिंताएं असीमित होती हैं तो हम कायरतापूर्ण व हड़बड़ी वाले फैसले करते हैं। हमारी इच्छाएं व चिंताएं अनंत हैं इनके पीछे भागना फिजूल है।

चंदन कुमार
स॰ लेखापरीक्षा अधिकारी

दारोगा बाबू

रूपा आज काफी खुश थी। खुशी का कारण भी था, उसकी शादी जो हो रही थी और वो भी उस लड़के से जो उसके घर किराये पर रहने आया कुछ दिनों के लिए और वो वहीं का रह गया। इतना सुंदर और गुणवान लड़का फिर उसे कहां मिलता, पास की ही चौकी में वो दारोगा जो ठहरा।

वह आइने के सामने बैठी श्रृंगार किये जा रही थी और मन ही मन शरमा भी रही थी कि मेरे भग्य में ऐसा लड़का जो घर बैठे मिल गया। वाह! मेरी किस्मत, कितनी अच्छी है, जो बाबू जी को ज्यादा मेहनत भी नहीं करनी पड़ी, मेरे लिये लड़का ढूंढने में। वह खूशी से फूली नहीं समा रही थी। रह-रह कर यह सोंच कर कि अब वह अपनी सहेलियों में भी धौंस जमायेगी कि मेरा मिंया दारोगा है, वह कुछ भी करवा सकता है।

तभी बाबूजी ने आवाज दी- रूपा जल्दी करो। मंदिर में शादी का मुहूर्त निकला जा रहा है।

रूपा ने आवाज दी - आई बाबूजी।

थोड़ी देर बाद वे सभी मंदिर पहुंच गये। मंदिर में 2-4 करीबी मुहल्लेवाले उपस्थित हैं। उनमें से एक, रामवरण महतो बाबूजी से पूछते हैं- भाई किशनलाल, तुमने तो बाजी मार ली। घर बैठे नौकरी वाला दामाद ढूंढ लिया, बिना मेहनत किये। लोगों की तो एड़ी-चोटी घिस जाती है, तब जाकर कहीं शादी पक्की होती है।

किशनलाल - ये ऊपर वाले की मेहरबानी है, जो मुझे कहीं भटकना ना पड़ा और मेरा किरायेदार मोहन बाबू (दारोगा) मेरी बेटी को देख शादी का प्रस्ताव रखा।

रामवरण महतो - वो तो ठीक है। पर भाई, उसके माता - पिता, भाई - बहन, कोई सगे-संबंधी तो होंगे, वो कहां हैं?

किशनलाल- उसका इस दुनिया में कोई नहीं है। 7 माह से वो मेरे यहां कमरा लेकर किराये पर रह रहा है, कोई मिलने भी नहीं आता उससे। बेचारा! अकेला है।

तभी पंडित जी- जजमान, शादी का मुहूर्त बीता जा रहा है।

किशनलाल- हाँ-हाँ पंडित जी, देर किस बात की। शुरू कीजिये।

2 घंटे बाद शादी खत्म हो गयी। अब हिंदू रीति-रिवाज से रूपा और मोहन पति-पत्नी थे।

ग्यारह दिन बाद किशनलाल के दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी। जब किशनलाल ने दरवाजा खोला तो देखा, बाहर पुलिस खड़ी थी।

ये देख किशनलाल डर गया, मगर फिर भी हिम्मत रख कि उसका दामाद भी तो दारोगा है, पूछा - क्या बात है?

पुलिस - मोहन बाबू यहीं रहते हैं ?
किशनलाल- हाँ, क्या बात है।
पुलिस- उनके नाम वारंट है।
किशनलाल- वारंट! पर किस बात का?
पुलिस- उनकी पहली पत्नी सुनयना ने मुकदमा दर्ज किया है कि बिना उनसे तलाक लिये, मोहन बाबू ने दूसरी शादी रचा ली।
किशनलाल सर पर हाथ रखते हुए बोला, ये मैंने क्या कर लिया, अपने ही हाथों अपनी बेटी की किस्मत खराब कर डाली। शादी से पहले लड़के की असलियत मालूम कर ली होती तो आज ये दिन न देखना पड़ता। बिना छान-बिन किये शादी के लिये हाँ भर दी और ये सोंचा कि ऐसा लड़का कहाँ मिलेगा, उसकी बातों पर विश्वास कर लिया। पर वो तो धोखेबाज निकला।
पुलिस मोहन बाबू को पकड़ कर ले गयी, उन पर मुकदमा चला और उनकी नौकरी भी छिन गयी। मुकदमे के दौरान ही यह पता चला कि 'रूपा', मोहन बाबू की दूसरी नहीं बल्कि तीसरी पत्नी है। पहली पत्नी 'सुगिया' को मायके में ही छोड़ रखा है और दूसरी 'सुनयना' से धोखा देकर शहर में शादी रचायी कि वह कुंवारा है और जब उसका तबादला दूसरे शहर में हो गया तब रूपा से शादी रचायी। 7 माह बाद तक जब सुनयना के पास कोई खबर मोहन बाबू की न आयी तब जाकर सुनयना ने सब-कुछ मालूम कर ये भंडा-फोड़ किया।

शैलेन्द्र कुमार
हिन्दी अनुवादक
भारत सरकार सेवार्थ

आदमी आवरण में

मृत शरीर पर कितने आवरण
चमकीले, हरे और पलाश के फूल।।

आत्मा की अमरता पर
युग युग से पड़ते रहे धूल।।

कलह-क्लेश का दर्पण बना
बुद्धिजीवियों के जीवन का मूल।।

कहाँ बिछाया संगमरमर हृदय में
और सजा डाली अपनी चूल।।

तुम्हारे हृदय में मैं बैठूँ, मेरे में तुम
औंधे से पड़ गए कितने ऐसे उसूल।।

बेकाबू इंसानियत, बेनकाब आदमियत
तुम कहाँ अनुकूल और मैं भी प्रतिकूल।।

रंगों की चादर तुम भी तो ओढ़े
नहीं रह गई ये सिर्फ मेरी भूल।।

तेरे हाँथ है प्याला और हम भी नशे में
अब कौन बचाएगा
वो श्याम श्वेत मर्यादा और
वो श्याम श्वेत कुल।।

संजय कुमार सिन्हा
लेखापरीक्षक

SAS PASSED

जब SAS का परिणाम आया
उसमे PAPPU का पास में नाम आया।
खुशी से पप्पू
धर्मपत्नी को PHONE घुमाया।
बतानी थी पत्नी को खबर कुछ खास
NETWORK फेल होने से धरी रह गई उनकी यह आस।

तभी पप्पू के मन में यह ख्याल आया
क्यों न SMS का लिया जाय सहारा।
मम्मी-पापा, दादा-दादी, रिश्तेदार और दोस्तों
को भेज दिया MESSAGE "SAS PASSED"
MESSAGE मिलते ही हो गया हर जगह "BLAST"
शैलेन्द्र जी (पप्पू के पड़ोसी) को ज्यों ही Message आया
उन्होंनें पप्पू के घर का दरवाजा खटखटाया।

शैलेन्द्र जी तो ठहरे अंग्रेजी के विद्वान महान
उन्होनें Message को हु-ब-हु Translate कर दिया बयान
कि हो गया आपके सास (SAS) का देहावसान
खुशी से उछली पप्पू की पत्नी
पर संभलते हुए बोली- ''क्या बात करते हैं?''
यह कैसे हो गया?
कल ही तो सासु माँ ने देखी थी पिक्चर ''फिदा''
आज कैसे हो गई इस दुनिया से ''विदा''।
सोंची खुशी दिखाउँगी तो हो जाएगा घर का भेद ''नंगा''
चलो बहा ही लेती हुँ आँखों से थोड़ी बहुत ''गंगा''

उधर पप्पू की Mummy को जब SMS आया
उन्होनें बहु के पास फोन घुमाया बोली- ''कौन?''
जीवित सास की आवाज सुनकर बहु हो गई- ''मौन''।
[तब तक हमारे कार्यालय के WA (कल्याण सहायक) जी भी पप्पू के घर पहुंच चुके थे, बोले ''पप्पू की सास...'
इतना सुनते ही पप्पू की पत्नी चिल्लाई
बोली मम्मी तो थीं बहुत अभी- 'हेल्दी'
कैसे चल गई दुनिया से इतनी 'जल्दी'।

हो गई मैं अनाथ जो
शीघ्र बुलाओ कोई मेरे प्राणनाथ को।
पप्पू जी के पास फोन आया
जल्दी आ जाओ पप्पू प्यारे
घर की स्थिति हो गई वारे न्यारे।

उधर घटनाक्रम से अनजान,
पप्पू जी अपने खुशी में मस्त,
घुसते ही घर, देखकर स्थिति हो गए पस्त।
मुस्कुराते हुए धर्मपत्नी से बोले ''प्राण प्यारी''
क्या है गड़बड़ झाला
क्यों लगाई हो घर में मेला।

मुस्कुराते हुए पति को देख पत्नी गुर्राई
मेरी मम्मी के गुजरने पर करते हो तुम ''ठिठाई''
होने दो मेरी भी SAS PASSED
बाटूंगी पूरे मुहल्ले में मिठाई।

पत्नी की बातों से पप्पू जी का सर चकराया
बोले सास को इतनी जल्दी जाने की क्या पड़ी
कितने दिनों के बाद तो खुशी घर आ के थी खड़ी।

उधर पप्पू के ससुराल में जब Message आया
पप्पू के सास ने भी बेटी के पास फोन घुमाया।
बोली- ''कौन?''

मम्मी की आवाज सुनकर पत्नी
के हो गए सभी गम- ''GONE''
[सारी स्थिति सामान्य होने पर सभी लोग शैलेन्द्र जी की ओर देखने लगे]
तब शैलेन्द्र जी बोले ''मैने तो सिर्फ किया था हिन्दी अनुवाद,
मुझे क्या पता हो जाएगाा इतना बड़ा विवाद।

पप्पू जी बोले Shailendra Jee ठीक नहीं है आपकी ये 'शरारत'
नहीं सुधरे तो करना पड़ेगा कुछ आपका 'करामत'
इतना सुनकर Shailendra Jee गुस्से में चिल्लाये
''अगर आप करते हिन्दी में काम
होता अगर आपको हिन्दी का ज्ञान
तो नहीं होते इतने लोग परेशान।''

चन्दन कुमार,
स० लेखापरीक्षा अधिकारी

मजदूर गाथा

कल जाते हुए सड़क पर,
मैनें देखा
सड़क के किनारे,
वो ढो रही थी पत्थर।

लिये हाथ में हथौड़ा,
जो पत्थरों को मारने दौड़ा।
थूरती, पीटती
पर चलाती संभाल कर,
फिर टोकरी लिये
उसमें इकट्ठा कर।
वो ढो रही थी पत्थर।

खड़ी धूप हो या छाँव
रहती वो नंगे पाँव।
अपने नम्र हाथों से वज्र पर,
प्रहार कर
तोड़ती पत्थर,
फिर वो ढोती पत्थर।

इन पत्थरों से बनेंगे
ऊँचे-ऊँचे अट्टालिकाएं
जो छुएंगे शिखर,
उनमें से होगा
कभी अपना भी एक घर,
लिये दिल में अरमान
ये सोंचती ही रह गयी वो
और मिली लाश उसकी,
उसी पत्थरों के ढेर पर।
और रह गई वो
ढोती पत्थर।।

बैरिस्टर राम
पर्यवेक्षक
निवासी लेखापरीक्षा कार्यालय

पर्दा

नये जमाने की सभ्यता की एक विशेष देन है फैशन, और फैशन का अर्थ हो गया है बेपर्दगी। नग्नता! आज जो जितना नंगा है वह उतना ही फैशन परस्त है। सभ्य और प्रगतिशील है।

पर्दा जो हमारे बीच सदियों से चला आ रहा था, फट गया। जर्जर हो गया। उसमें बड़े-बड़े छेद हो गये। लोगों ने कहा - अब यह पुराना हो गया है। इसे उखाड़कर फेंक दो। नये युग के नये हाथों ने उस पर्दे को उखाड़कर फेंक दिया।

फलस्वरूप दुनिया नंगी हो गई और कुछ विशेष बुद्धि वाले इसी नग्नता को प्रगतिशील सभ्यता मान बैठे।

चन्दन कु
स० लेखापरीक्षा अधि

प्रेम

देखता हूँ जब भी तुम्हें,
नजर ठहर सी जाती है।

मिलता हूँ जब भी तुमसे,
सांसें असर कर ही जाती हैं।

बातें होती हैं,
एक अनजान की तरह ही,
मगर धड़कनें तो कुछ और ही
खबर कर जाती है।।

तुझे देखने के खातिर ही,
खड़ा रहता हूं सड़क पर।
और इंतजार करता हूं तेरा,
देख न लूं, तुझे जब तक नजर भर कर।।

तुम्हें मालूम भी है या नहीं,
चाहता हूं मैं तुम्हें कितना!
कि समुन्दर को भी पा लूं तो,
अब गहराई कम सी नजर आती है।

और उस गहराई में,
मर भी जाऊं तो,
तेरा क्या होगा,
ये सोंचते ही, नजर भर सी जाती है।।

रमेश चन्द्रा
पर्यवेक्षक
मुख्यालय, राँची

मेरी श्रीनगर यात्रा

हमलोग अपने परिवार के साथ श्रीनगर जाने के लिए काफी उत्साहित थे। बचपन में किताबों में कश्मीर के बारे में पढ़ा था, भारत का स्वर्ग कहलाने वाला कश्मीर कैसा होगा। आखिरकार हम लोग परिवार के साथ श्रीनगर इस वर्ष 2013, के सितम्बर माह में श्रीनगर एल०टी०सी० में गए। श्रीनगर पहुंचने के बाद हमलोग होटल में रूके, जो डल लेक के सामने था एवं उसका नजारा काफी खुबसुरत था। शाम को हमलोग शिकारे से डल लेक घुमने गये। दुसरे दिन हम लोग गुलमर्ग गए। रास्ते में खुबसुरत पेड़, लंबे-लंबे चिनार के पेड़ चारों ओर फैले थे, जिससे नजारा खुबसरत हो गया, जिसे आँखों में समेट पाना मुश्किल हो रहा था। वाकई में भगवान ने दिल खोल कर कश्मीर को खुबसूरत बनाया है। गुलमर्ग पहुंच कर हम लोग गंडोला में चढ़े, गंडोला तक जाने के लिए हम लोगों को घोड़े से जाना पड़ा। ऊपर पहाड़ में जाने के बाद वहाँ ठंड महसूस होने लगी, कहीं-कहीं धुंध भी थी। थोड़ा सा बर्फ भी देखने को मिला। ऊपर पड़ोसी देश पाकिस्तान का बॉर्डर था, उस पार जाने की मनाही थी। काफी ऊँचाई होने के कारण हम लोग गंडोला से गुलमर्ग आ गए। गुलमर्ग में अन्य स्थानों को खुबसुरत पार्क, गोल्फ ग्राउण्ड देखा। शाम को हम लोग टैक्सी से वापस श्रीनगर आ गए।

फिर दुसरे दिन हम लोग पहलगांव गए। यह श्रीनगर से थेड़ी दुर में स्थित है, काफी खुबसुरत जगह है। रास्ते भर हमलोग खुबसुरती को निहारते गए। कई तस्वीरें भी ली, अखरोट जंगल तथा सेब बगान भी देखे। लाल-लाल सेब पेड़ में फले हुए थे। वहाँ हमलोगों ने गाड़ी रोक कर सेब के बगान कि तस्वीर ली। पहलगाम पहुंच कर वहाँ की सुंदरता देख कर लगता था कि पहले किधर देखूं, हर ओर हरियाली और झरना बह रहा है। सामने जंगलों से भरे ऊँचे-ऊँचे पहाड़ तथा नीचे कल-कल करती नदियां। पहलगाम पहुंचने पर लोगों ने बताया यहां मिनी-स्वीटजरलैंड है वहाँ जाने के लिए हम लोगों को घोड़ा लेना पड़ा। काफी ऊँचाई पर उबड़-खाबड़ रास्ते से जाना पड़ा। अंदर से डर भी लग रहा था कि कहीं गिर न पड़ें। एक तरफ वहाँ कि खुबसुरती देखता, दुसरी ओर उबड़-खाबड़ रास्ते को देखकर डरता। वहाँ पहुँचकर वहाँ के दृष्य को देखकर मंत्र-मुग्ध हो गया। वाकई खुबसुरत नजारा था। हम लोग वहाँ थोड़ी देर बैठे। फिर घोड़े के द्वारा नीचे आए। खाना खाने के पश्चात् फिर दुसरी टैक्सी लेकर हमलोग बेताब वैली, चन्दनवाड़ी तथा आरूवैली गए। वहाँ रास्ते भर रोड के किनारे नदी बह रही थी। हम लोग काफी उंचाई पर गए थे। हर जगह कलकल-कलकल करती झरने बह रहे थे रोड काफी घुमावदार था, एक ओर पहाड़ और दुसरी ओर झरने बह रहे थे। पत्थरों के बीच पानी इतना स्वच्छ निर्मल तथा ठंडा था, जहां पर मौका मिला हम लोग वहाँ प्यास बुझाते। लगता था जैसे पानी में मिठास घुला है और फ्रिज की तरह ठंडा था जब हम लोग ऊपर पहुंचे तो उस वक्त हम हिमालय की गोद में थे। उपर से झरना गिर रहा था।..... नीचे बहुत सारे लोग बैठकर उसका लुत्फ उठा रहे थे। इतनी

खुबसूरत वादियाँ मन को मोह रही थी। लगता था यहीं रूक जाऊ। वहाँ पर अमरनाथ जाने का रास्ता था। थोड़ी दूर हमने सीढ़ियां चढ़ीं, शाम होने जा रहा था इस लिये ज्यादा देर नहीं रूक सके। प्रकुति की इतनी सुंदर छटा देखकर आत्मा तृप्त गई वहाँ की हर जगह अपने आप में मिशाल है । अगर कश्मीर को स्वर्ग कहा जाता है, फुलों की रानी कहा जाता है तो उ पानी का राजा भी कहुँगा। क्योंकि वहाँ हर जगह जंगल, झरना, नदियां बहती हुई दिखाई देती है। पथरीली पहाड़ियों की नदि निश्छल भाव से बहती रहती है। वहाँ रास्ते में कई जगह भेड़ भी देखने को मिला। वहाँ के लोग भेड़ पालते हैं। तीसरे दि हमलोग सोनमर्ग देखने गए। वहाँ पर भी हमें अपनी टैक्सी छोड़कर दुसरी टैक्सी में आगे जाना पड़ा। उसके बाद वह टैक्सी छोड़नी पड़ी और घोड़े के द्वारा आगे जाना पड़ा। वहाँ पैदल आसानी से जाया जा सकता है पर घोड़े वाले काफी परेशान क देते हैं। उनकी कमाई का जरिया बाहर से आए हुए टुरिस्ट होते हैं। वहाँ पहुंचने के बाद थोड़ी देर हम वहाँ बैठें। उपर बर्फ थ जो नीचे से साफ दिखाई दे रहा था। बच्चे उपर जाकर बर्फ से खेलने लगे। हम ज्यादा ऊपर नहीं जा सके क्यों कि वहाँ काफ ठंड थी। नीचे से ही उसकी खुबसुरती को अपनी आंखों में कैद कर लेना चाहता था। शाम को हमलोग होटल लौट आए अगले दिन हमलोग श्रीनगर में सारे पार्क घुमने गए और शंकराचार्य जी का मंदिर देखने गए। उपर से कश्मीर (श्रीनगर) क सुंदर नजारा देखने को मिला। पार्क में भी नदियाँ बह रही थी, जितनी भी नदियाँ थी सभी छोटे-बड़े पत्थरों के बीच से बहत है जो देखने में और खुबसुरत लगता है।

चश्में शाही भी देखा हमलोग पानी भी पीये, बोतल में पानी भी भरा, वहाँ की खुबसूरती के बारे में कहना काफ मुश्किल है। कुदरत की बनाई इस खुबसूरती को महसुस किया जा सकता है, हम लोग वहाँ मनोरंजन किये। बच्चे भी मस्त किए, कोई परेशानी नहीं हुई। टैक्सी वाले या वहाँ के लोग भी टुरिस्ट से अच्छा व्यवहार करते हैं। हम लोग जितना सुनते ह वहाँ के बारे में उतना डर नहीं है। हमलोगों को हमारे वापस लौट के आने एक दिन पहले से ही श्रीनगर में बंदी थी। फिर भ हमलोग हाउस बोट गए, डल लेक के किनारे घुमें। चारों ओर सैनिकों का जत्था भरा हुआ था। कोई परेशानी नहीं हुई, बंदी म ही हमलोगों को टैक्सी चालक श्रीनगर एयरपोर्ट पहुंचाया। हमलोग आराम से वापस राँची आ गए। शालीमार पार्क हम लोग नहीं घुम पाए क्योंकि वहाँ पर प्रसिद्ध सितार वादक जुवेन मेहता का कार्यक्रम के कारण पार्क बंद था।

कहते हैं स्वर्ग बहुत खुबसूरत है,
पर हमने तो स्वर्ग नहीं देखा।
कश्मीर की वादियों में जा कर,
ख्वाबों से भी सुंदर नजारा देखा।
स्वर्ग की तो कल्पना करते है,
पर कश्मीर को आंखों से देखा है।

बी. निधी
सुपुत्री श्रीमती संगीता वर्णवाल,
व० लेखापरीक्षक

अग्नि

ये आग की लौ भी अजीब है,
ना एक रूप है ना रंग।

ना कोई इससे खफ़ा है,
ना कोई उसके संग।

वो बुरी हो जाती है जब दंगे फैलाती है,
पर हवन की भीनी खुशबू भी इसी से आती है ।

कभी अंतिम विधियां भी कराती है,
वो जन्मदिन का हिस्सा कभी बन जाती है ।

कहीं मशाल बन कर अमर ज्योति जलाती है,
तो कभी दो जिन्दगीयों के मेल कराती है ।

कभी गुस्से में आकर खेत जलाती है,
और कभी भुट्टों के मीठे दानों के स्वाद भी दिलाती है ।

श्रीमती काजल प्रिसिल्ला
(w/o श्री ई.एन.बा, ले.प.अ

उड़ान

आज फिर उड़ान भरते हैं
चलो आसमान से दिल्लगी करते हैं।

न कोई बंदिशें होंगी
न कोई कारवां होगा।

कुछ पाने की खुशी तो होगी,
लेकिन कुछ खोने का गम न होगा।

दूर तलक निगाहें होगी,
नीले समंदर की छटी घटायें होगी।

एक फक्र होगा, एक एहसास होगा,
कुछ तमन्नायें भी होंगी,
तो किसी के साथ होने का एहसास भी होगा।

तो फिर किस सोच में डूबे हो,
आओ दोस्तों मेरा साथ दो।

फिर मिलके दिल्लगी करते हैं,
आज फिर उड़ान भरते हैं,
आज फिर उड़ान भरते हैं।

अंशु रानी
क्लास : नवम्
सुपुत्री श्री बैरिस्टर राम, पर्यवेक्षक
निवासी लेखापरीक्षा कार्यालय

तकदीर

कर बहाना तकदीर का क्यों जिन्दगी भर रोते रहे,
तकदीर खुद आई द्वार पर वो बेफिक्र सोते रहे।

शेर दिल इन्सान तो तकदीर खुद बना लेते हैं,
एक वो है जो द्वार पर आई तकदीर को भगा देते हैं।

तकदीर भी मेहनत के घरौंदे में पनाह लेती है,
नेक दिल इन्सान को अपना साथी बना लेती है।

मेहनत किये बिना जो अपनी तकदीर को आजमाते हैं,
तकदीर बदल देती है रास्ता, वे देखते रह जाते हैं।

तकदीर तुम्हारे द्वार पर राह बन आई है,
अरमान तुम्हारे जीवन के वो पूरे करने आई है।

हो भरोसा खुद पे तो तुम इसके साथ चलना,
काम करने की चाह हो तो तुम इसकी चाह रखना।

फिर देखना तुमको यह क्या से क्या बना देती है,
सोचा नहीं जो आज तक वो सच बना देती है।

अंशु रा
क्लास : न
सुपुत्री : श्री बैरिस्टर राम, पर्यवेक्ष
निवासी लेखापरीक्षा कार्या

सच्चा इन्सान

जिसमें सेवा का भाव नहीं,
मानवता का अहसास नहीं,
जो खुद से ही अनजान है,
वह काहे का इन्सान है।
जिसमें न दया कि सोच है,
जो देश के ऊपर बोझ है,
यहाँ उसका न कोई स्थान है,
वह काहे का इन्सान है।
जो दुःख में रहता है,
जो औरों को भी दुःख देता है।
जो हर सुख से अनजान है,
वह काहे का इन्सान है।
जिसके भीतर प्यार नहीं,
जिसके हो अच्छे विचार नहीं
नफरत ही जिसकी शान है,
वह काहे का इन्सान है।
जो राम के नाम पे लड़ रहा,
बिन बात की जिद पे अड़ रहा।
जो राम का करता अपमान है,
वह काहे का इन्सान है।
जिसमें कुछ भी अभिमान है
न औरों का सम्मान है
उसका झूठा सारा ज्ञान है
वह काहे का इन्सान है।

अपूर्वा शर्मा
सुपुत्री श्री अनिरूद्ध कुमार
सा०ले०प०अ०

गुब्बारे वाला

गुब्बारे वाला गुब्बारे लाया,
रंग-बिरंगे गुब्बारे लाया,
गुब्बारे ले लो गुब्बारे ले लो,
ज़ोर से आवाज़ लगाते आया।

साथ में बाँसुरी और डमरू लाया,
धुन मधुर बजाते आया,
आवाज सुन बच्चे घर से निकले,
नंगे पाँव दौड़ते चलें।

आवाज सुन मैं भी घर से निकली,
माँ से पैसे लेकर निकली,
ढेर सारे रंग-बिरंगें गुब्बारे लेकर,
जल्दी-जल्दी वापस मैं घर को चली।

गुब्बारे वाला गुब्बारे वाला,
सभी बाँसुरी और डमरू बेचकर,
और रंग-बिरंगे गुब्बारे बच्चों को देकर,
वापस अपने घर को चल पड़ा।

अपूर्वा इ
सुपुत्री श्री अनिरूद्ध क्
सा०ले०प

Friendship

Friends are like trees,
Teaching us to do right,
By giving some advice,
with all their might.

Friends are like birds,
Sitting together on a swing,
Looking very bright,
with beautiful white eyes.

Friends are like roses,
Holding their heads high,
With beautiful petals,
Swinging their heads in the sky.

Friends are like sun and moon,
Rising in the morning and rising in the night,
Shining together to keep the earth bright,
By giving some light.

Manisha Lall
Niece, Shri Shailendra Kr.
H. Translator

Believe In Yourself...!

If you think you are beaten,
you are.

If you think you dare not, you don't.
If you would like to win but think,
you can't,
It's a cinch you won't.

If you think you're lost,
You have lost.

For out in the world we find.....
SUCCESS begins with a fellow's will,

It's all a state of mind:
Life's battles don't always go to the
stronger or faster man.

But sooner or later,
The man who wins,
Is the man who thinks he can.

हिंदी पखवाड़े का महा उत्सव

शैलेन्द्र कुमार
हिंदी अनुवादक

बड़ी शालिनता व आदर भाव के साथ हर वर्ष की तरह वर्ष 2013 में भी 1 से 14 सितम्बर तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस मुबारक मौके पर तरह तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें मुख्यत: निबंध लेखन प्रतियोगिता, टिप्पण व प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, टंकण व कविता पाठ तथा चुटकुले शामिल थे।

आपको जानकर असीम हर्ष होगा कि इस बार का हिंदी पखवाड़ा अन्य हिंदी पखवाड़ो से भिन्न रहा और इसकी वजह थी कि हमारे इकाई कार्यालय के उप निदेशक श्री जी.सी.चट्टोपाध्याय ने भी प्रतियोगिता में भाग लेकर कॉमर्शियल ऑडिट में इतिहास रचा। कर्मचारियों के मनोबल में अप्रत्याशित वृद्धि कंचन जल के समान झलक रही थी। इस घटना से प्रतिभागियों के छिपे हुए हृदय के भाव छिपाए नहीं छिप रहे थे तथा वे अपने आप को अनंत उत्साहित महसूस कर रहे थे।

पखवाड़े का समापन दुध जैसी रौशनी उगलते सम्मेलन कक्ष में श्री सुशील कुमार जायसवाल, प्रधान निदेशक की अध्यक्षता में हुई। इस समापन समारोह के मंच का संचालन श्री शैलेन्द्र कुमार, हिंदी अनुवादक द्वारा बड़ी शालिनता के साथ किया गया। कार्यक्रम की छटा में अविश्वसनीय परिवर्तन तब दिखा जब श्री शैलेन्द्र कुमार, अनुवादक, पूर्व कविता पाठ विजेता श्री संजय कुमार, ले.प. तथा श्री संजीव कुमार, स.ले.प.अ. ने अपने अपने स्वरचित हास्य कविताओं की बौछार की। प्रधान निदेशक महोदय तथा उप निदेशक महोदय जैसे गणमान्य व्यक्तियों के समक्ष कर्टसी मेंटेन करने वाले सारे अन्य अधिकारीगण व कर्मचारीगण अपने ठहाकों भरी हंसी को काबू नहीं कर पाएं। अंतत: प्रधान निदेशक महोदय की सराहना कविता पाठ करने वाले कर्मचारियों व अधिकारियों के लिए अभिमान का विषय बना। तदोपरान्त विजेता प्रतिभागियों को प्रधान निदेशक महोदय तथा उप निदेशक महोदय द्वारा उपहार देकर विभूषित किया गया।

वर्ष 2013 में कार्यालय में आयोजित भिन्न-भिन्न प्रतियोगितायों में सफल उम्मीदवारों की सूची

1.	हिन्दी निबंध प्रतियोगिता (अधिकारियों के लिए)	1. प्रथम – श्री चन्दन कुमार, स.ले.प.अ., रिपोर्ट – I 2. द्वितीय – श्री अनिरूद्ध कुमार, स.ले.प.अ., प्रशासन 3. तृतीय – श्री विजय कु. गुप्ता, स.ले.प.अ., बोकारो
2.	हिन्दी निबंध प्रतियोगिता (कर्मचारियों के लिए)	1. प्रथम – श्री आदर्श शरण, ले.प., बोकारो 2. द्वितीय – श्रीमती डी. कौर, व.ले.प., रिपो०-I 3. तृतीय – श्री विनोद कु. यादव, ले.प., भिलाई
3.	अनुवाद प्रतियोगिता (कर्मचारियों के लिए)	1. प्रथम – श्री राजेन्द्र सिंह, व.ले.प., रोकड़ 2. द्वितीय – श्री धर्मराज, ले.प. बर्णपुर 3. तृतीय – श्रीमती सरिता कावा, व.ले.प., रिपोर्ट – II
4.	हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता (अधिकारियों के लिए)	1. प्रथम – श्री अनिरूद्ध कुमार, स.ले.प.अ., प्रशासन 2. द्वितीय – श्री ई.एन.बा., ले.प.अ., एल.ए.पी. 3. तृतीय – श्री विजय कु. गुप्ता, स.ले.प.अ., बोकारो
5.	हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता (कर्मचारियों के लिए)	1. प्रथम – श्रीमती डी. कौर, व.ले.प., रिपो०-I 2. द्वितीय – श्री संजय कु. सिन्हा, ले.प., रिपो०-I 3. तृतीय – श्रीमती सरिता कावा, व.ले.प., रिपो०-II
6.	हिन्दी टंकण प्रतियोगिता	1. प्रथम – श्री कोलाय बांकिरा, व.ले.प., प्रशा० 2. द्वितीय – श्री पी.सी.एस. मुण्डा, व.ले.प., स्था० 3. तृतीय – श्री मिठु कुमार, लि/ट., प्रशा०
7.	हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता (केवल समूह 'घ' कर्मचारियों के लिए)	1. प्रथम – श्री विभय कुमार सिन्हा, एम.टी.एस. 2. द्वितीय – मो. हुसैन अली, एम.टी.एस. 3. तृतीय – श्री शनिचरवां उरांव, एम.टी.एस.
8.	हिन्दी श्रुतिलेख प्रतियोगिता (केवल समूह 'घ' कर्मचारियों के लिए)	1. प्रथम – श्रीमती अर्चना कुमारी, एम.टी.एस. 2. द्वितीय – श्रीमती मिलोनी बाजरा, एम.टी.एस. 3. तृतीय – श्री बिरसा उरांव, एम.टी.एस.
9.	वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रतियोगिता	1. प्रथम – श्री राजेन्द्र सिंह व.ले.प., रोकड़ 2. द्वितीय – श्री दिवेश कु. साहु, स.ले.प.अ., एल.ए.पी. 3. तृतीय – श्री संदीप कु. चौधरी, ले.प., रिपो०-I
10.	कविता पाठ, चुटकुले, हास्य व्यंग्य	1. प्रथम – श्री संजय कु. सिन्हा रिपो०-I 2. द्वितीय – श्री चंदन कुमार रिपो०-I 3. तृतीय – श्रीमती डी. कौर रिपो०-I

सेवा-निवृति

वर्ष 2013-14 में सेवा-निवृत हुए हमारे कार्यालयी स्तम्भ:-

	नाम- सर्वश्री/श्री	पद	सेवा-निवृति की तिथि
1.	बसंती मंडल	व०ले०प०	30.04.2013
2.	एन.एल. श्रीवास्तव	व०ले०प०अ०	30.06.2013
3.	पी० सोरेन	व०ले०प०	31.08.2013
4.	एस. के. आचार्या	व०ले०प०अ०	30.09.2013
5.	मानसी मजूमदार	व०ले०प०	30.11.2013
6.	रंजीत कुमार	व०ले०प०	31.12.2013
7.	मो. सलाम	आशुलिपिक	31.01.2014
8.	डी. कौर	व० ले० प०	31.03.2014

कार्यालयी कार्यो में अपने जीवन के अमूल्य पल व परिश्रम देने हेतु 'प्रमिलांचल' परिवार आपके सुखी जीवन की कामना करता है।

चुटकुले

1. "शादी के पहले और शादी के बाद के जीवन में क्या अंतर है?" सुखीराम ने दुखीराम से पूछा।
"शादी के पहले पुरूष खुशी से खर्च करता है, और शादी के बाद मजबूरी में।" दुखीराम ने दुखी हो के कहा।

2. एक अभिनेता - "फिल्म में मेरी मरने की जबरदस्त ऐक्टिंग देख कर एक महीला बेहोश हो गई।"
दूसरा अभिनेता - "यह तो कुछ भी नहीं, मैनें तो मरने की ऐसी ऐक्टिंग की मेरी पत्नी को एक बीमा कम्पनी ने मुआवजे का चेक भेज दिया।"

3. पति (साइकोलॉजिस्ट से) - "मैं अपनी पत्नी की याद्दाश्त के कारण बहुत परेशान रहता हूँ।"
साइकोलॉजिस्ट - "क्या वे सब कुछ भूल जाती है।"
पति - "नहीं डॉक्टर साहब नहीं। वह जल्दी कुछ भूलती ही नहीं।"

4. पत्नी खीजकर पति से बोली - "ए जी! आजकल आप नींद में बहुत बोलने लगे हो।"
पति (सहजता से) - "तो तुम क्या चाहती हो कि नींद में भी तुम्हारी ही सुनता रहूँ।"

5. सास ने नई बहु को बताया, मैं इस घर की गृह मंत्री हूँ। वित्त मंत्रालय भी मैं ही सम्भालती हूँ। तुम्हारे ससुर विदेश मंत्री हैं। मेरा बेटा आपूर्ति मंत्री है और बेटी योजना मंत्री है। तुम कौन सा विभाग लेना पसंद करोगी। जो मैं तो विपक्ष में बैठुँगी बहु ने तपाक से जवाब दिया।

6. पुलिस : हमें आपके घर की तलाशी लेनी है, आपके घर में विस्फोटक सामग्री है।
संता : खबर तो पक्की है पर अभी वो मायके गई है।

7. अधिकारी : क्या तुम्हारे पास कोई ठोस कारण है जिसके लिए तुम्हें मोर्चे पर लड़ने नहीं भेजा जाए?
लल्लू : हाँ! मेरी आँखें कमजोर हैं।
अधिकारी : क्या इसकी कोई रिपोर्ट है तुम्हारे पास?
लल्लू : हाँ! यह रहा मेरी पत्नी का फोटो।

8. दाम्पत्य जीवन के आरंभ के तीन वर्ष : -
पहला वर्ष - वह बोलता है, वह सुनती है।
दूसरा वर्ष - वह बोलती है, वह सुनता है।
तीसरा वर्ष - दोनों बोलते हैं और पड़ोसी सुनते हैं।

संजीव कुमार
सः लेखापरीक्षा अधिकारी

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित
वस्तुनिष्ठ प्रश्न परीक्षा में भाग लेते कर्मचारीगण

हिंदी पखवाड़े में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण करते हुए
श्री अजय कुमार, उप निदेशक (प्रशासन)

हिंदी पखवाड़े के दौरान अधिकारी व कर्मचारीगण

श्रीमती इस्थर लकड़ा,
वरीय लेखापरीक्षक की विदाई की यादें

कार्यालय में होली मिलन समारोह

श्री सुब्रतो सरकार,
वरीय लेखापरीक्षक की सेवानिवृति की यादें

श्री एन.एल. श्रीवास्तव,
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी की
सेवानिवृति के यादगार पल

मुद्रक: हर्ष कम्प्यूटर प्वाईंट, हिनू, राँची मो.-9835134120